तर्तीब व तालीफ
मुहम्मद अब्दुर्रहीम खान क़ादरी जमदा शाही
ज़िला बस्ती यू पी 272002
खतीब व इमाम जामा मस्जिद दमुआ
ज़िला छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश) 480555
मोबाइल नम्बरः 7415066579
email - khanjamdashahi@gmail.com
jamdashahi.blogspot.com
www.issuu.com /abdurrhimkhan

गौ़से अअ़ज़म! खुदा के लिए कुछ अता हो!!!

सवालः– वज़ीफा–ए–या हज़रत सुल्तान शैख़ सय्यिद शाह अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी शैअल्लिल्लाह ! पढ़ना हम लोग जायज़ कहते हैं, जबकि कुछ लोग इसे कुफर व शिर्क कहते हैं सही क्या है ?

जवाब : इस अर्बी वाक्य का उर्दू तर्जमा यह है।

'' ऐ हज़रत सुल्तान शैख़ आक़ा शाह अब्दुल क़ादिर जीलानी ! खुदा के लिए कुछ अता हो !''

अर्बी का यह वाक्य बिलकुल ऐसा ही है जैसे आ़म बोल चाल में हम कहा करते हैं कि '' खुदा के लिए मेरी मदद कीजिए''यअ़नी अपनी इमदाद के लिए मैं खुदा का वास्ता देता हूं यहां इसका मतलब यह नहीं , मआ़ज़ल्लाह तआ़ला! किः–खुदा मुहताज है , इस लिए उस के लिये कुछ अ़ता कीजिए। ऐसा अक़ीदा रखना यक़ीनन कुफर है, मगर ऐसा अक़ीदा जाहिल से जाहिल भी नहीं रखता है। ज़बान का यह मुहा़वरा आ़म–ख़ास सभी में रिवाज पड़ा हुआ है लेकिन आज तक किसी ने इस पर एतेराज़ नहीं किया।

ख़तम क़ादिरिया शरीफ का तरीक़ा

बीमारियों से शिफा पाने,बलाओं को दूर करने,मुश्किलों के आसान होने, क़ैदियों के रिहाई के लिए,क़र्ज से छुटकारा पाने,ग़र्ज़ की जिस दीनी व दुनियावी बला व अफात के टलने के लिए पढ़ा जाये इन्शाअल्लाह तआ़ला मौला तआ़ला बहोत जल्द वह आफत दूर फरमाएगा और जिस जाइज़ मक़सद के लिए पढ़ा जाए ज़रुर कामयाबी हासिल हो।

वज़ू करके, खुश्बू लगा कर पढ़े। मुजर्रब दर मुजर्रब है (यअ़नी तजरबा किया हुआ है।)

(1)दरुद ग़ौसिया शरीफः– अल्लाहुम–म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिम्मअ़दिनिल जूदि वल करम व आलिहिल किरामि वबनिहिल करीमि वबारिक वसल्लिम 111 बार

(2) सुबहानल्लाहि वलह़म्दु लिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर, वला हौ ल वला क़ ़ व त इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम 111 बार

(3) सूरए अलम नशरह़ 111 बार (4) सूरए कुल हुअल्लाह 111 बार (5) सूरए यासीन एक बार (6) या बाक़ी– अन्तल बाक़ी 111 बार (7) या शाफी– अन्तश्शाफी 111 बार (8)या काफी– अन्तल काफी 111 बार (9)या रसूलल्लाहि उन्ज़ुर ह़ालना,या ह़बीबल्लाहि इसमअ़ क़ालना, इन्ननी फी बह़रि ग़म्मिम मुग़रक़िन, खुज़ बि य दी सह हिल अश्क़ालना, 111 बार

(10) या हबीबल्लाहि ! खुज़ बि य दी । मा लि इ जाजी सवा क मुस त न दी 111 बार (11) सहहिल या इलाही कुल ल सअ़बिम बिहुरमति सय्यिदिल अबरारि सहहिल 111 बार (12) या सिद्दीक़, या उ़मर ,या उ़स्मान, या हैदर,। दफा शर कुन! ख़ैर आवुर ! या शब्बीर व शब्बर 111 बार (13) या हज़रत सुल्तान शैख़ सय्यिद शाह अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी शैअल्लिल्लाह ! अल मदद, 111 बार (14) मा हमा मुहताज! तू हाजत रवा ! अल मदद ! या ग़ौसे अअ़ज़म पीर मा। 111 बार

(14) इमदाद कुन! इमदाद कुन! अज़ बन्दे ग़म आज़ाद कुन ,दर दीन व दुनिया शाद कुन ! या ग़ौसे अअ़ज़म दस्तगीर । 111 बार (15) तुफैल हज़रत दस्तगीर दुशमन होवे ज़ेर 111 बार (15) दरुदे ग़ौसिया 111 बार (16) क़सीदए ग़ौसिया एक बार

तोशए ग़ौसे अअ़ज़म

हुजूर, पुर नूर, पीराने पीर दस्तगीर, वाहिबुल मुराद,दाफिउल फसाद,सय्यदना शैख़ मुहिय्युद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु का तोशए मुबारका हाजते दीनी व दुनियावी के लिए माना जाता है जब्कि हर तरफ से मायूसी ही मायूसी नज़र आती है। उस की बरकत से सख़्त से सख़्त मुहिम आसान हो जाती है क़ब्ल अज़ मुराद अदा (मुराद से पहले) करें या निस्फ (आधा) पहले और आधा बअ़द में , सुन्नी मुसलमानों को खिलायें,खाने वाले बा वुज़ू खायें, खाने के बअ़द हाथ धोने से पहले अपने मक़सद के लिए दुआ़ करें।

बादाम डेढ़ किलो, पिस्ता डेढ़ किलो, किशमिश डेढ़ किलो, खोपरा डेढ़ किलो, सूजी छ 6 किलो,असली घी छ 6 किलो, शकर छ 6 किलो, लोंग डेढ़ ग्राम, इलाइची डेढ़ ग्राम,दार चीनी डेढ़ ग्राम, सब का ह़लवा बनायें। बादाम, पिस्ता, खोपरा,लौंग, दार चीनी, इलाइची,को बारीक करलें । फिर जैसे ह़लवह बनाते हैं बनायें । सलात व सलाम और फातिहा पढ़ कर सवाब मअ़ तोशा शरीफ नज़र करें । और हुज़ूर ग़ौसे पाक के वसीले से रब्बे करीम की बारगाह में अपनी हाजत अर्ज़ करें।

नमाज़े ग़ौसिया का तरीक़ा (सलातुल असरार शरीफ)

तर्कीबः– सलातुल असरार शरीफ जिसे दीनी व दुनयवी हाजत हो वह मग़्रिब की सुन्नत व नफ्ल के बअ़द सलातुलअसरार

शरीफ की निय्यत से कुर्ब इलाही के लिए और हुजूर सर कारे ग़ौसे अअ़ज़म दस्तगीर रदियल्लाहु तअ़ाला अन्हु को तोहफा पेश करने के लिए 2 रकअ़त नमाज़ पढ़ें अगर ताज़ा वजू कर लें तो बेहतर है और अगर पहले कुछ सदक़ा ख़ैरात दे दें तो मतलब जल्द हल हो आर बलाओं के टलने का सबब हो। नमाज़ में सूरए फातिहा के बाद जो कुरआन से याद हो पढ़ें अगर कुल हुअल्लाहु अह़द 11 बार पढ़ें तो बेहतर है। नमाज़ पूरी कर के फिर क़िब्ला की तरफ मुंह कर के ख़ड़े हों कर सूरए फातिहा एक बार,आयतलकुर्सी सात बार, इस के बाद दरुद शरीफ पढ़ें '' अल्लाहुम–म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिम्मअ़दिनिल जूदि वल करम,व आलिहिल किरामि वबनिहिल करीमि व उम्मतिल करीमि या अकरमल अकरमीन,व बारिक व सल्लिम '' पढ़ें। अपने दिल को मदीना मुनव्वरा की तरफ लगाये रख्खे और ग्यारह बार यह कहे :
'' या रसूलल्लाह ! या नबिय्यल्लाह ! अग़िस्नी ! वमदिदनी फी कदाअ़ि हाजती ! या क़ादियल ह़ाजात!
फिर बग़दाद शरीफ की तरफ (इराक़) की तरफ 11 क़दम चले।
यह ख़्याल रख्खे कि गोया मैं बग़दाद शरीफ में हाज़िर हूं और रौज़ए पाक मेरे सामने है। और सरकार ग़ौसे पाक रदियल्लाहु तअ़ाला अन्हु क़िब्ला की तरफ चेहरा किए हुए आराम फरमा रहे हैं। और चाहिए कि उन के करम पर भरोसा रख्खे और यह समझे कि वह (रदियल्लाहु तअ़ाला अन्ह) देख रहे हैं और हर क़दम पर यह कहता जाए '' या ग़ौसस्सक़लैन ! या करीमत्तरफैन ! अग़िस्नी व अम्दिदनी! फी क़दाअि हाजती ! या क़ादियल हाजात!''
फिर अल्लाह तअ़ाला से यूं अर्ज़ करे :

'' या अर्हमर्राहिमीन !'' 3 बार या बदीअ़स्समावाति वल अर्दि या ज़लजलालि वल इकराम बिजाहि सय्यिदिल मुर्सलीन व बिजाहिब्निही हाजस्सय्यिदिल करीम ग़ौसिनिल अअ़ज़म रदियल्लाहु तअ़ाला अन्हु। अब मतलब कहे । फिर 3 बार '' आमीन '' दरुद शरीफ पढ़े। बेहतर यह :
'' अस्सलातु वस्सलामु अ़ला ख़ातिमिन्निबिय्यीन वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल अ़ालमीन '' पर ख़तम करे और कोशिश करे कि रोना आये और अगर रोना न आये तो रोने जैसा मुंह बनाये तो अल्लाह तअ़ाला उस की ह़ाजत पूरी फरमा देगा (अह़सनुल विअ़ा)

नुस्खए जीलानी इन्शाअल्लाह साल भर तक आफतों से हिफाज़त

रबीउल आखिर (ग्यारहवीं के महीने में ग्यारहवीं शब में) सरकारे ग़ौसे पाक रदियल्लाहु तअ़ाला अन्हु के ग्यारह नाम (अव्वल आख़िर ग्यारह बार दरुद शरीफ) पढ़ कर ग्यारह खजूरों पर दम कर के उसी रात खा लीजिए । इन्शाअल्लाह सारा साल मुसीबतों से हिफाज़त होगी । ग्यारा नाम यह हैं।
(1) या शैख़ मुहिय्युद्दीन
(2) या सय्यद मुहिय्युद्दीन (3) या मौलाना मुहिय्युद्दीन (4) या मख़दूम मुहिय्युद्दीन (5)या दरवेश मुहिय्युद्दीन (6) या ख़्वाजा मुहिय्युद्दीन (7)या सुलतान मुहिय्युद्दीन (8)या शाह मुहिय्युद्दीन (9)या या ग़ौस मुहिय्युद्दीन (10)या कुत्ब मुहिय्युद्दीन (11)या ससय्यिदिस्सादात अ़ब्दल क़ादिर जीलानी

सब से बड़ी मुसीबत, क़र्ज़ है।
सब से अच्छा जुहद,मेहनत है।
सब से अच्छी बात, उम्मीद है।
सब से बड़ा डाक्टर, परहेज़ है।
सब से बड़ी दौलत,इल्म है।
सब से बड़ा सहारा,ख़दा का है।
सब से कड़वी चीज़,मुफलिसी है।
सब से खतरनाक चीज़, लालच है।
सब से बड़ी बेवक़ूफी,खुद को अच्छा समझना है।

सब से बड़ी नेअ़मत,तन्दुरुस्ती है।